पीएच.डी. शोध कार्य के लिए

प्रस्तुत शोध प्रारूप

जयपुर में पर्यटन उद्योगः सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

सन् 2016

शोध निर्देशक

प्रोफेसर
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,
जयपुर।

शोधार्थी
अनिल कुमार शर्मा

भूगोल विभाग
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,
जयपुर।

पर्यटन : परिचय एवं महत्त्व

मनुष्य सदैव से ही जिज्ञासु प्राणी रहा है। अपरिचित स्थलों को देखने जानने एवं समझने की जिज्ञासा मनुष्य की स्वभावगत प्रवृति रही है। इसी प्रवृति का परिणाम है 'पर्यटन'। आनन्द की खोज, मनोरंजन, तीर्थाटन, व्यापार व विनिमय, नवीन स्थलों को देखने की मानव सुलभ इच्छा, अलग–अलग स्थलों पर फैली मानव सभ्यता–संस्कृति को देखने की जिज्ञासा आदि अनेक कारणों से पर्यटन का विस्तार हुआ और यात्राओं ने व्यवस्थित रूप लेना आरम्भ किया।

ऐसा नहीं है कि पर्यटन आधुनिक युग की उपज है। पाषाण काल से ही आदि मानव भोजन, आवास, सुरक्षा तथा अन्य जरूरतों के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करता रहता था। सभ्यता के जन्म के साथ मानव की इस रूचि का भी विस्तार हुआ। नवीन स्थलों की खोज, नई खोजों के प्रति मनुष्य की जिज्ञासा, तीर्थ–स्थलों का भ्रमण, व्यापार–वाणिज्य का विकास, दूसरे देशों पर अधिकार की लालसा, धार्मिक उत्साह आदि कारणों से पर्यटन का विस्तार हुआ।

जैसे–जैसे पर्यटन की सोच का विकास हुआ है, पर्यटन से जुड़ी अन्य क्रियाओं यथा आवास, भोजन, परिवहन आदि व्यवसायों का भी विकास त्वरित गति से होने लगा है। आमतौर पर पर्यटन एवं यात्रा को एक ही मान लिया जाता है। जबकि इन दोनों में मूलभूत अन्तर है। यात्रा का उद्देश्य व्यवसाय या अन्य कुछ भी हो सकता है परन्तु पर्यटन का अर्थ है – मनोरजंन, ज्ञानवर्धन, नया देखने की जिज्ञासा को शान्त करने के लिए भ्रमण। पर्यटन व्यक्ति को ज्ञान प्रदान करने के साथ ही अपने परिवेश से अलग लोगों की संस्कृति, परम्पराओं, मान्यताओं, खान–पान आदि के बारे में बहुत कुछ नयी जानकारियाँ प्रदान करता है।

मोटे तौर पर पर्यटन को समझे तो लगातार एक वर्ष या उससे कम समय तक सैर–सपाटा, व्यापार तथा अन्य कार्यों के लिए अपने रहने के सामान्य स्थान से बाहर घूमने तथा ठहरने वाले व्यक्तियों से जुडी गतिविधियों को पर्यटन कहा जाता है।

पर्यटन देश–विदेश की भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक जानकारी प्रदान करने की ऐसी क्रिया है जिसमें भिन्न–भिन्न लोगों से मेल–मिलाप ही नहीं होता बल्कि व्यक्ति प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष ऐसा ज्ञान भी अनायास ही प्राप्त करता है जो अन्य किसी स्रोत से नहीं मिल सकता है।

वर्तमान में पर्यटन के नित नये रूप उभर कर सामने आ रहे है जिसे हम पारम्परिक नहीं कह सकते है। पर्यटक अब प्राकृतिक सौन्दर्य और नयी जगह पर घूमनें फिरने तक ही सीमित नहीं रहा है। पर्यटन के अन्तर्गत पर्यटक अब नयी अनुभूतियाँ करना चाहता है। ऐसे में हम कह सकते हैं कि जीवन का ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं रहा जिसे पर्यटन से जोड़ नहीं दिया गया है। कहा जा सकता है कि पर्यटन वह असीमित क्षेत्र हो गया है, जिसे किसी भी सीमा में बांधा नहीं जा सकता है। पर्यटन वह उभरती हुई प्रवृति है जिसे नवीनता एवं आधुनिकता से जोड़ते हुए विभिन्न तत्वों का सुनियोजित प्रबन्ध किया जाने लगा है। ऐसे में यह स्वाभाविक ही है कि पर्यटन अब पहले से ज्यादा व्यवस्थित हो गया और विभिन्न रूपों में पर्यटकों को लुभाने वाला हो गया है।

पर्यटन के लिए अंग्रेजी में TOURISM शब्द का प्रयोग किया गया है। TOUR शब्द की उत्पत्ति TORNOS (टारनोस) लेटिन भाषा के शब्द से हुई है। टारनोस शब्द एक ऐसे औजार (मशीन) के लिए प्रयुक्त हुआ है जिसे घूमते पहिये पर लगाकर व्यक्ति भ्रमण करता रहता है। पर्यटन के लिए संस्कृत में तीन पर्यायों का प्रयोग हुआ है–

- परायटन – अर्थात् सोद्देश्य (ज्ञान व आनन्द हेतु) भ्रमण करना।
- देशाटन – अर्थात् सामाजिक एवं आर्थिक लाभ के यात्रा करना।
- तीर्थाटन – अर्थात् धार्मिक कारण एवं आस्था भाव से की गई यात्रा।

पर्यटन में वे सभी व्यापारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्रियायें सम्मिलित है जो यात्रियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। किसी भी यात्रा को पर्यटन तब कहा जाएगा जब वह निम्नाकिंत उद्देश्यों की पूर्ति करता हो–

- जब यात्रा ऐच्छिक हो।
- जब यात्रा अस्थायी हो हालांकि इसकी अवधि बड़ी हो सकती है।
- जब यात्रा का उद्देश्य किसी प्रकार का पारिश्रमिक प्राप्त करना नहीं हो।
- जब यात्रा से कोई ज्ञान या लाभ (चाहे धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा मनोरंजक) प्राप्त हो।

जब यात्रा उक्त उद्देश्यों को पूरा करती है तभी उसे पर्यटन की संज्ञा दी जा सकती है।

साहित्यिक पुनरावलोकनः–

'पर्यटन' विषय पर पूर्व में अनेक ग्रन्थ लिखे गये है। डा. आर.के मुखर्जी ने अपनी पुस्तक ''प्राचीन सभ्यता के इतिहास'' में भारत के प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों पर पर्यटन के महत्व को दर्शाया है। देवेन्द्र कुमार जैन ने अपने ग्रन्थ ''खजुराहो ए स्टडी इन ट्यूरिस्ट ज्योग्राफी बिहेवियर पैटर्न एण्ड ज्योग्राफिकल एनालिसिस'' में पर्यटन के व्यवहारिक पक्ष की ओर ध्यान दिया है। खजुराहो में आने वाले देशी–विदेशी पर्यटकों की स्थिति, रूचि, खजुराहो की वास्तुकला, वातावरण आदि का अध्ययन पुस्तक में किया गया है।

एस.के सैनी ने ''जयपुर नगर के पर्यटन स्थलों का भौगोलिक विश्लेषण'' में राजस्थान की भौगोलिक जानकारी प्रदान करते हुए जयपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में यहॉ के धार्मिक, सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों का विवरण दिया है। एल.के. पवांर ने ''डवलपिगं रूरल ट्यूरिज्म फॉर सोशियल इकोनोमिक डवलपमेन्ट इन रूरल एरिया

ऑफ राजस्थान'' मे ग्रामीण पर्यटन के महत्व को दर्शाया है। राघवेन्द्र सिंह मनोहर कृत ''राजस्थान के प्रमुख दुर्ग'' में राजपूताना के प्रसिद्ध किले/दुर्गों का विस्तृत विवरण मिलता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में अपने बेजोड़ स्थापत्य के लिये जाने जाने वाले ये दुर्ग पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है।

राजेश व्यास ने अपनी पुस्तक 'पर्यटन उदभव एवं विकास' एवं 'सांस्कृतिक राजस्थान' में पर्यटन को देश के सबसे बड़े उद्योगो में से एक बताया हैं। पर्यटन का संगठन, प्रबन्धन, आधारभूत सुविधाएँ आदि का विवरण पुस्तक में हुआ है। मोहनलाल गुप्ता के ग्रन्थ ''जयपुर सम्भाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन'' में जयपुर, अलवर, दौसा, झुंझुन तथा सीकर के पर्यटन स्थलों पर प्रकाश डाला गया है।

विषय का चयनः–

राजस्थान की वीरभूमि विविध विशिष्टतायें लिये हुए है। योद्धाओं का अमिट पराक्रम, जन्मभूमि के लिये आत्मोत्सर्ग की प्रबल भावना, नारियों का शौर्य, त्याग व बलिदान, संस्कृति का वैविध्य सदैव लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ एक ओर विशाल थार का रेगिस्थान है तो दूसरी ओर अरावली की प्राचीन श्रंखलाएँ है। पश्चिम में रेत के विशाल टीले है तो दक्षिण वनों एवं हरितिमा के वैभव से युक्त है। प्रदेश का यह भौगोलिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक परिदृश्य सदैव पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहा है।

यहाँ की फिजाओं में व्याप्त अनेक कथायें, स्थापत्य के बेजोड़ नमूने दुर्ग, महल, हवेलियाँ, मन्दिर, जलाशय आदि स्मारक पर्यटकों को लुभाने में सहायक है। उक्त सभी कारणों के फलस्वरूप प्रदेश में पर्यटन उद्योग प्रगति कर रहा है।

इस विषय पर अभी तक अनेक शोध कार्य हुए है। किन्तु पर्यटन के विकास के लिए जिस विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक अध्ययन की आवश्यकता है वह अभी तक

नहीं हो पाया है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए शोधार्थी ने पर्यटन विषय का चुनाव किया है।

विषय का उद्देश्यः–

पर्यटन आज विश्व में अतिशीघ्रगामी विकसित उद्योगों में से एक हैं। वैश्वीकरण एवं भौतिकवाद के युग में यह एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक स्तम्भ है। भारतवर्ष में पंचवर्षीय योजनाओं में इसे महती स्थान दिया गया है। आर्थिक सेक्टरों में सर्वाधिक वृद्धि दर तथा तुलनात्मक रूप से कम निवेश पर सर्वाधिक प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रोजगार का सृजन करने वाला उद्योग "पर्यटन उद्योग" है। अर्थव्यवस्था में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए ही राजस्थान सरकार ने पर्यटन के विकास के लिए कई कारगर कदम उठाये है। पर्यटन को व्यवसायिक रूप प्रदान करते हुए इसे जन उद्योग का दर्जा दिया गया है।

पर्यटन न केवल आर्थिक लाभ वरन् सामाजिक–धार्मिक सद्भाव तथा सांस्कृतिक एकत्व प्रदान करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। शोधार्थी ने "पर्यटन" की महत्ता के कारण ही उक्त विषय का चयन किया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में जयपुर जिले में पर्यटन के ऐतिहासिक स्वरूप का अध्ययन कर विभिन्न पर्यटक स्थलों को उनकी उपादेयतानुसार सूचीबद्ध करने का आग्रह होगा। वर्तमान पर्यटन उद्योग की सुविधाओं तथा समस्याओं की सूची का अन्वेषण कर उसका समाधान करने का प्रयास शोधार्थी की प्राथमिकता में होगा। जिससे जिले के भावी पर्यटन विकास हेतु उपर्युक्त योजनाओं का निर्धारण हो सके ओर यहाँ आने वाला प्रत्येक पर्यटक अपने भ्रमण/ यात्रा का आनन्द उठा सके।

उक्त विषय के चुनाव का प्रमुख उद्देश्य निम्नांकित तथ्यों को स्थापित करना है–

- कि पर्यटन उद्योग को जन उद्योग का दर्जा दिया जा सकता है।
- पर्यटन के ऐतिहासिक स्वरूप का अध्ययन करना शोध प्रबन्ध का उद्देश्य है।

- पर्यटन स्थलों का वर्गीकरण एवं उन्हें सूचीबद्ध करना प्राथमिकता में रहेगा।
- पर्यटन उद्योग की समस्याओं का अन्वेषण करना शोधार्थी की प्राथमिकता है।
- उक्त समस्याओं के समाधान का प्रयास किये जायेंगे।
- यह तथ्य स्थापित किया जायेगा कि पर्यटन ना केवल एक उद्योग है अपितु सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक सद्भाव का प्रतीक है।
- पर्यटन राजस्थान की अर्थव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण स्तम्भ है– प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में यह दर्शानें का प्रयास किया जायेगा।

अध्ययन क्षेत्र का निर्धारणः–

विषय का गहन अध्ययन एवं तथ्यों का वस्तुनिष्ठ तरीके से संकलन करने के लिए 'जयपुर' जिले को अध्ययन का क्षेत्र निर्धारित किया गया। सम्पूर्ण राजस्थान में पर्यटकों का अध्ययन करना समय, श्रम एवं अर्थ की सीमाओं के कारण दुष्कर था। क्षेत्रीय दृष्टि से लेखन की आवश्यकता ने भी अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण करने में सहयोग दिया। पर्यटन विकास के लिए जिस विश्लेषणात्मक अध्ययन की आवश्यकता है उसे एक क्षेत्र विशेष का अध्ययन कर पूरा किया जा सकता है। जिससे पर्यटकों को सम्पूर्ण आकर्षण स्थलों एवं सुविधाओं की जानकारी प्राप्त हो सके।

निम्नाकिंत कारणों से प्रेरित हो कर शोधार्थी ने शोध अध्ययन क्षेत्र के रूप में जयपुर जिले का चयन किया है–

- जयपुर भारत के प्रसिद्ध ऐतिहासिक धराहरों में से एक है एवं राजस्थान की राजधानी है।
- परिवहन (रेल व सड़क) की दृष्टि से भारत के तीसरे गोल्डन ट्राइएंगल पर बसा हुआ है।

- भारत आने वाला प्रत्येक तीसरा पर्यटक जयपुर देखने के लिए आता है।
- जयपुर की पर्यटन व्यवस्था आधुनिक तकनीक व सुविधाओं पर केन्द्रित हो रही है। जिससे अध्ययन एवं आंकडों का संग्रहण सुचारू एवं सरल रूप से हो सकता है।
- समय, अर्थ एवं श्रम की सीमाओं के कारण जयपुर जिले का चुनाव किया गया।
- जयपुर जिले का मूल निवासी होने के कारण अध्ययन सामग्री की उपलब्धता, पर्यटन केन्द्रों के प्रत्यक्ष दर्शन, पर्यटन मन्त्रालय से आंकड़ों की उपलब्धता ने जयपुर जिले को अध्ययन केन्द्र बनाने की ओर प्रेरित किया।
- जयपुर जिले पर ऐतिहासिक व भौगोलिक दृष्टि से पर्यटन से सम्बन्धित आधुनिक शोधकार्य अभी तक नहीं हुआ है।

शोध तकनीकीः–

प्रस्तुत शोध में जिले में पर्यटन को देखने के लिये शोधार्थी द्वारा प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का संग्रहण किया जायेगा। संग्रहित ऑकड़ों से गत 5–5 वर्ष के अन्तर को फोटोग्राफिक विधियों के माध्यम से जयपुर पर्यटक स्थलों को अलग–अलग आभाओं द्वारा दिखाया जायेगा। पर्यटकों की कमी या अधिकता दिखाने के लिये जिले के मानचित्र पर वर्णमात्री व समान रेखाविधि द्वारा उन केन्द्रों को मानचित्र पर प्रदर्शित किया जायेगा। शोधार्थी द्वारा विभिन्न स्थानों से एकत्रित प्राथमिक एवं द्वितीयक प्रकार के आंकड़ो का संक्षेपण सारणीयन एवं परिवर्तन करके विभिन्न गणितीय एवं सांख्यिकी विधियों का प्रयोग कर परिणाम निकाला जायेगा। तथा आंकड़ो, संख्याओं व सारणियों को तालिकाओं, मानचित्रों द्वारा प्रदर्शित करने साथ साथ संमकों को प्रभावपूर्ण एवं रूचिकर बनाने के लिए चित्रमय प्रदर्शन किया जायेगा। चित्रमय

प्रदर्शन करने के लिये प्रतिशत अन्तर्विभक्त दण्ड चित्र, द्विविमा चित्र, वृत्त चित्र विधि के प्रयोग द्वारा दर्शाया व विश्लेषित किया जायेगा।

आँकड़ों के संकलन का स्त्रोतः–

शोधार्थी द्वारा प्राथमिक स्तर के आँकड़े प्राप्त के लिए जयपुर में आने वाले 200 विदेशी एवं 400 स्वदेशी पर्यटको से निदर्शन विधि (Sampling Mathod) के अन्तर्गत साक्षात्कार एवं प्रश्नावली का प्रयोग कर व्यक्तिगत प्रेक्षण विधि एवं अनुसूची विधि को उपयोग में लेकर आँकड़ों का अध्ययन किया जायेगा।

द्वितीयक प्रकार के आँकड़े प्राप्त करने के लिए सरकारी प्रकाशन जिसके अन्तर्गत केन्द्रीय एवं राज्य सरकार के विभिन्न विभागों से प्रकाशित रिपोर्टस्, अर्द्धसरकारी के तहत जिले की नगर पालिकाओं, नगर निगम, जिला परिषद्, जयपुर विकास प्राधिकरण आदि विभागों से प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदनों का अध्ययन किया जायेगा। भू–सर्वेक्षण हेतु भारतीय सर्वेक्षण विभाग से जयपुर जिले का मानचित्र लेकर जयपुर जिले के प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण, परिवहन मार्ग एवं विभिन्न पर्यटक केन्द्रों के मानचित्र बनाये जायेंगे। निजी क्षेत्र के अन्तर्गत ट्यूर ऑपरेटर, ट्रेवल ऐजेन्सी, होटल एवं रेस्तरां उद्योग, एम्पोरियम आदि द्वारा पर्यटन सम्बन्धी सूचनाएँ एकत्रित की जायेगी। इसके अतिरिक्त पर्यटन, परिवहन, मनोरंजन विभाग के अधिकारियों, गाईडों आदि से साक्षात्कार करके पर्यटन सम्बन्धी सुविधाओं एवं समस्याओं का अध्ययन किया जायेगा

विषय–सूची

1. प्रस्तावना

2. जयपुर की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि

3. जयपुर के पर्यटन स्थल

4. पर्यटकों का वर्गीकरण

5. पर्यटन उद्योगः संगठन एवं प्रबन्धन

6. पर्यटन उद्योग की समस्याएँ एवं समाधान

7. उपसंहार

शोध ग्रन्थ के प्रथम अध्याय "**प्रस्तावना**" में अध्ययन की प्रकृति, अध्ययन के उद्देश्य, अनुसंधान प्रविधि, साहित्यिक पुनरावलोकन, प्राक्कल्पना, अध्ययन क्षेत्र, पर्यटन का आशय, पर्यटन का उद्‌भव एवं विकास तथा पर्यटन की महत्ता का विवेचन किया जायेगा।

द्वितीय अध्याय "**जयपुर की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि**" में जयपुर का इतिहास, भौगोलिक संरचना, भौतिक विभाजन, जलवायु की स्थिति, अध्ययन क्षेत्र की जनांकिकी संरचना का अध्ययन किया जायेगा।

तृतीय अध्याय "**जयपुर के पर्यटन स्थल**" के अर्न्तगत जयपुर के प्रमुख पर्यटन स्थल जैसे दुर्ग, किले, महल, उद्यान, मन्दिर, संग्रहालय, शैक्षणिक संस्थान,

अभिलेखागार, चिकित्सालय एवं जयपुर के निकटवर्ती पर्यटन स्थलों का अध्ययन किया जायेगा।

चतुर्थ अध्याय "**पर्यटकों का वर्गीकरण**" के अर्न्तगत जयपुर में आने वाले देशी व विदेशी पर्यटको का आयु, लिंग, शिक्षा एवं आर्थिक आधार पर वर्गीकरण किया जायेगा साथ ही पर्यटन उद्योग से प्राप्त विदेशी मुद्रा तथा अन्य लाभों की चर्चा की जायेगी।

पंचम् अध्याय "**पर्यटन उद्योगः संगठन एवं प्रबन्धन**" में पर्यटन के प्रेरक तत्त्व, पर्यटन के आधार, पर्यटन के विविध प्रकार, पर्यटन नीति एवं योजना निर्धारण, पर्यटन का प्रबन्धन, भारत में पर्यटन संगठन व व्यवस्था, पर्यटन सूचना स्रोत, ट्रेवल एजेन्सी, ट्रेवल गाइड, परिवहन के साधन, आवास, बैकिंग सेवा, सरकारी संस्थाएँ आदि का अध्ययन किया जायेगा।

षष्टम् अध्याय "**पर्यटन उद्योगः समस्याएँ एवं समाधान**" के अर्न्तगत पर्यटन उद्योग से सम्बन्धित विभिन्न समस्याएँ, पर्यटको को होने वाली असुविधाएँ तथा उनके समाधानों का प्रयास किया जायेगा।

सप्तम् अध्याय "**उपसंहार**" के अर्न्तगत जयपुर जिले में पर्यटन से सम्बन्धित विभिन्न सम्भावनाओं पर विचार करते हुए आधुनिक तथ्यों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया जायेगा।

शोध प्रबन्ध के अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची एवं परिशिष्ट सम्मिलित किये जायेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Ahuja, S.P.	:	"Tourism in India a Prospective to 1990" The Institute of economic & Market research, New Delhi 1977
Acharya, Ram	:	Tourism & Culture Heritage in India, RBSA Publication, Jaipur 1980
Acharya, Ram	:	Civil Aviation & Tourism Administration in India National Publishing House, New Delhi 1978
Akhtar, Javed	:	Tourism in India Ashish Publication House New Delhi 1990
Batra, G.S.	:	Tourism management a Global 1995
Bhatia, A.K	:	Tourism in India (History & Development), Sterling Publishers Pvt. New Delhi 1978
भल्ला, एल. आर.	:	राजस्थान का भूगोल, जयपुर 2017
Chawala, Romila	:	Tourism in India Perspective & Challenges, Sonali Publications, New

Delhi. 2003

Chawla, A.S. : 1996 Perspective, Deep & Deep Publication,New Delhi 1996

Chopra, Sunita : Tourism Development in India, Ashish Publications House, New Delhi 1991

Chouhan, T.S. : Encylopaedia of Rajasthan, Jodhpur 1996

Gulab, Nebi : Socio Economic Impact of Tourism, Jaipur 2000

जोशी, राधेश्याम : सचित्र राजस्थान दर्शन, भीलवाड़ा 2000

माथुर, डॉ. सुरेन्द : यात्रा साहित्य का उद्‌भव और विकास, दिल्ली 1962

नीरज, जय सिंह : राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, जयपुर 2001

व्यास, प्रो. पी.सी. : विश्व के प्रसिद्ध पर्यटक स्थल, कानपुर 2001

सांस्कृत्यायन, राहुल : धुमक्कड़ शास्त्र, दिल्ली 1949

शर्मा, गोपीनाथ : राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, जयपुर 1999

श्रीमाली, विजय : होटल व्यवसाय में कार्मिक प्रबन्ध, जयपुर 1993

Sharma, Shollo : Indian Tourism Today ABD Publisher,

Jaipur 2002

Singh, Ashok : Cultural Tourism in India, Raj Book enterprises, Jaipur 2002

गहलोत, जगदीश सिंह : कछवाहों का इतिहास, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर, 2004.

गोस्वामी, प्रेमचन्द : राजस्थान : संस्कृति कला एवं साहित्य, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2006

नीरज, जयसिंह एवं शर्मा, भगवती : राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2000

ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2000

पेमाराम (सम्पा.) : राजस्थान में धर्म सम्प्रदाय व आस्थाएँ, इतिहास विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, 2004

भटनागर, वीरेन्द्र स्वरूप : सवाई जयसिंह, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1998

मनोहर, राघवेन्द्र सिंह : राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1997

शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश : रिसर्च मेथडॉलॉजी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2004

सक्सैना, शालिनी : राजस्थान के लोक तीर्थ, श्याम प्रकाशन, जयपुर, 2001

व्यास, राजेश कुमार : पर्यटन उद्‌भव एवं विकास, , राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2013

व्यास, राजेश कुमार : सांस्कृतिक राजस्थान , राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर,

गुप्ता, मोहन लाल : जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2015

Articles

गुर्जर, के.सी. : ''राजस्थान में पर्यटन उद्योग की भूमिका एवं सम्भावनाएँ'' मूलप्रश्न –दिसम्बर, 2007

गुर्जर, रामकुमार : ''पर्यटन व्यवसाय में रोजगार के अवसर'' राजस्थान पत्रिका–16 दिसम्बर, 1997

शेखावत, अशोक सिंह : ''ढाण्या में पधार्‌यो इण्डिया टुडे–19 सितम्बर, 2007

शर्मा, ओ.पी. : ''पर्यटन की दशा एवं दिशा'' प्रतियोगिता दर्पण– दिसम्बर, 2005

Gautam, S.N. : "Employment opportunities in Tourism & Hotel Management" Milestone annual magazine 2007Ajmer,

पुरोहित, मनोज : ''पर्यटन विश्व को एक सूत्र में पिरोता है' Milestone annual magazine 2007Ajmer

सेठ, रविन्द्र : ''पर्यटन विकास में अवसर'' योजना– अगस्त, 1998

शेखावत, बजरंग सिंह : ''पर्यटन उद्योग जन उद्योग''राजस्थान सुजस–जनवरी, 2008

सिंह, सत्यनारायण : ''पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये नजरिया भी बदलें' दैनिक नवज्योति– 27 सितम्बर, 2007

व्यास, राजेन्द्र कुमार : ''भारत में पर्यटन'' योजना– मई, 1994

Singh, Jitendra : "Role of tourism in economic development" Milestone annual magazine 2007 Ajmer.

व्यास, राजेश कुमार : ''मेहमाननवाजी के लिये पधारो म्हारे देश'' दैनिक नवज्योति–23 दिसम्बर, 2007

JOURNALS AND MAGAZINES

कुरूक्षेत्र : ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली

मूल प्रश्न : न्यू अहिंसापुरी, फतेहपुरा, उदयपुर

इंड़िया एयर बुक : प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत, सरकार,, नई दिल्ली

R.T.D.C.Annual Report : राजस्थान पर्यटन विभाग, जयपुर

राजस्थान सुजस : सूचना एवं जनसम्पर्क केन्द्र, जयपुर

शोधार्थी : विकासशील समाज अध्ययन पीठ (C.S.D.S.), नई दिल्ली

योजना : योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली

Destination Rajasthan : Department of Tourism Art and

Atithi Culture, Govt. of Rajasthan